www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अध्यात्म अपने परिष्कृत रूप में हमारे जीवन में उतरे

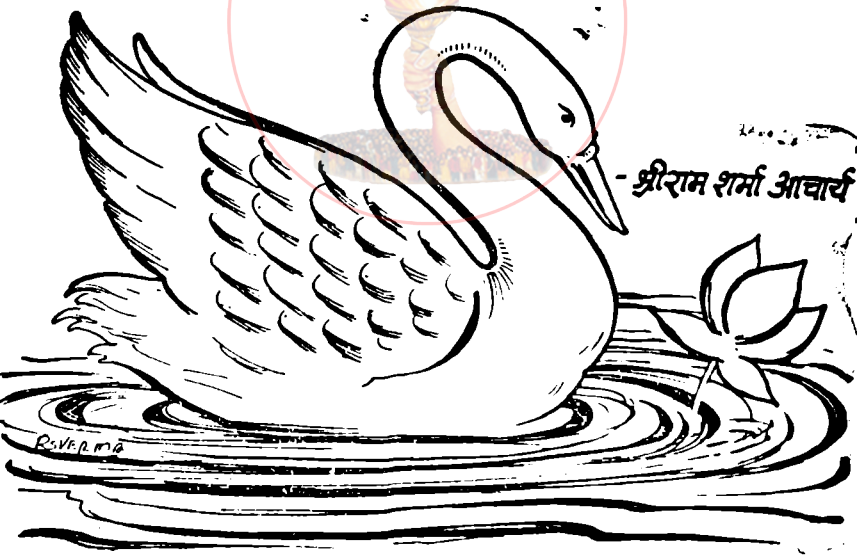

- श्रीराम शर्मा आचार्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

YUG NIRMAN YOJANA, GAYATRI TAPOBHUMI
MATHURA, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अध्यात्म अपने परिष्कृत रूप में हमारे जीवन में उतरे

अध्यात्म की तुलना अमृत, पारस और कल्प-वृक्ष से की गई है। इस महान् तत्व-ज्ञान के सम्पर्क में आकर मनुष्य अपने वास्तविक स्वरूप को—बल और महत्व को—पक्ष और प्रयोजन को ठीक तरह समझ लेता है। इस आस्था के आधार पर विनिर्मित कार्य पद्धति को दृढ़ता पूर्वक अपनाये रहने पर वह मानव बन जाता है, भले ही सामान्य परिस्थितियों का जीवन जीना पड़े। अध्यात्मवादी की आस्थायें और विचारणायें इतने ऊँचे स्तर की होती हैं कि उनके निवास-स्थान अन्तःकरण में अमृत का निर्झर झरने जैसा आनन्द और उल्लास हर घड़ी उपलब्ध होता रहता है।

अध्यात्म निस्संदेह पारसमणि है। जिसने उसे छुआ वह लोहे से सोना हो गया। गुण, कर्म और स्वभाव में महत्तम उत्कृष्टता उत्पन्न करना अध्यात्म का प्रधान प्रतिफल है। जिसकी आन्तरिक महानता विकसित होगी, उसकी बाह्य प्रतिभा का प्रखर होना नितान्त स्वाभाविक है। और प्रखर प्रतिभा जहाँ कहीं भी होगी, वहाँ सफलतायें और समृद्धियाँ हाथ बाँधे सामने खड़ी दिखाई देंगी। लघु को महान् बनाने की सामर्थ्य और किसी में नहीं, केवल अन्तरङ्ग की महत्ता, गुण-कर्म, स्वभाव की उत्कृष्टता में है। इसी को अध्यात्म उगाता बढ़ाता और सँभालता है, फल स्वरूप उसे पारस कहने में किसी को कोई आपत्ति नहीं. उसे पाकर अन्तःरङ्ग ही हर्षोल्लास में निमग्न नहीं रहता, बहिरङ्ग जीवन भी स्वर्ग जैसी आभा से दीप्तिमान होता है। इतिहास का पन्ना-पन्ना इस प्रतिपादन से भरा पड़ा है कि इस तत्व-ज्ञान को अपना कर कितने कलुषित और कुरूप लौह खण्ड स्वर्ण जैसे बहुमूल्य, महान्, अग्रिणी एवं प्रकाशवान् बनने में सफल हुए हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कल्पना की ललक और लचक ही मानव-जीवन का सबसे बड़ा आकर्षण है। कल्पना लोक में उड़ने वाले ही कलाकार कहलाते हैं। सरसता नाम की जो अनुभूतियाँ हमें तरंगित आकर्षित एवं उल्लसित करती हैं, उसका निवास कल्पना क्षेत्र में ही है। भावनाओं में ही आनन्द का उद्गम है। आहार निद्रा से लेकर इन्द्रिय तृप्ति तककी सामान्य शारीरिक क्रियायें भी मनोरम तब लगती हैं, जब उनके साथ सुव्यवस्थित भाव कल्पना का तारतम्य जुड़ा हो, अन्यथा वे नीरस एवं भार रूप क्रिया-कलाप मात्र बनकर रह जाती हैं। उच्च कल्पनायें अभाव ग्रस्त, असमर्थ जीवन में भी आशायें और उमंगें संचारित करती रहती हैं। संसार में जितना शरीर सम्पर्क से उत्पन्न सुख है, उससे लाख-करोड़ गुना कल्पना, विचारणा एवं भावना पर अवलम्बित है। उस दिव्य संस्थान को सुव्यवस्थित करने और परिस्थितियों के साथ ठीक तरह ताल मेल मिला लेनेकी पद्धति का नाम अध्यात्म है। इसलिए उसे कल्प-वृक्ष भी कहते हैं।

अलंकारिक रूप से कल्प-वृक्ष उस पेड़ का नाम है, जिसके नीचे बैठकर हर कल्पना, कामना को पूर्ण करने का अवसर मिल जाता है। मोटे अर्थ में जैसा कि कल्प-वृक्ष को समझा जाता है, यदि उस तरह का अस्तित्व नहीं रहा होता तो सारे संसार में तबाही उत्पन्न हो जाती। सामान्य मनुष्य वासना, तृष्णा, द्वेष, लोभ-मोह का पुतला होता है और वे लिप्साएँ ऐसी हैं, जो कभी तृप्त नहीं होतीं। जितना मिलता है, उतनी ही बढ़ती जाती हैं। यदि कथित कल्प-वृक्ष कहीं होता और ओछा मनुष्य कुछ घण्टे के लिये भी उसके नीचे बैठ जाता तो सारी विश्व वसुधा को अपनी मुट्ठी में करके सबका सुख, सौभाग्य छीन लेता और स्वयं निरकुश स्वेच्छाचार बरतता। इसी से इस पृथ्वी पर कल्प-वृक्ष नहीं है और सामान्य मनुष्य उसका लाभ नहीं ले सकते।

पृथ्वी का कल्प-वृक्ष—अध्यात्म है। उसकी छाया में बैठने पर अनावश्यक—अवांछनीय—अनुपयुक्त कल्पनायें स्वयंमेव तिरोहित हो जाती हैं। जो उचित, उत्तम एवं उपयुक्त है, वे ही शेष रह जाती हैं। उनकी पूर्ति के लिए आवश्यक पुरुषार्थ करने की तत्परता अध्यात्मवादी में उत्पन्न होती है, तदनुसार वह अभीष्ट मनोरथ सरलता पूर्वक पूर्ण करता चला जाता है। बाधा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

केवल लोभ-मोह की पूर्ति में आती है। सरल सौम्य और शुभ कल्पनायें, संयम सेवा और सज्जनता से ओत-प्रोत सद्भावनायें हर परिस्थिति में हर मनुष्य तृप्त करता रह सकता है। अध्यात्म निस्सन्देह कल्प-वृक्ष है, वह जिस अन्तः करण में उगेगा, वहाँ न अवांछनीयता कल्पनायें उगेंगी और न उनको पूर्ति में बाधा उत्पन्न होने से असन्तोष उत्पन्न होगा। अध्यात्मवादी व्यक्ति सदा सब परिस्थितियों में अपनी आन्तरिक उत्कृष्टता के कारण हँसता, मुस्कराता, तृप्त और सन्तुष्ट देखा जा सकता है। कल्प-वृक्ष का यही तो प्रतिफल होना चाहिए सो अध्यात्म मार्ग पर चलने वाला कोई भी, कभी भी, यह लाभ परिपूर्ण मात्रा में ले सकता है।

पुरुष को पुरुषोत्तम, आत्मा को परमात्मा, नर को नारायण और लघु को महान् बनाने की विद्या का नाम अध्यात्म है। धन, और बल पाकर लोक में 'बड़े आदमी बन सकते हैं' पर महापुरुष बनने का श्रेय केवल आत्म-बल सम्पन्न को मिलता है। ऐसे व्यक्ति की आन्तरिक विभूतियाँ इतनी स्थिर और प्रकाश वान होती हैं कि चिरकाल तक दूरवर्ती लोगों तक उनका उत्कर्ष प्रद प्रकाश पहुँचता रहता है। अपने को तो असीम शांति एवं तृप्ति मिलती ही है।

महापुरुष स्वयं धन्य बनते हैं औह चन्दन वृक्ष की तरह अपनी सुगन्ध से समीपवर्ती सारे वातावरण को सुगन्धित कर देते हैं। दीपक की तरह वे स्वयं प्रकाशवान् होते हैं और अपने समीपवर्ती क्षेत्र का अन्धकार दूर कर वहाँ दूसरों की आँखें सार्थक बनाने वाली रोशनी उत्पन्न करते हैं। बड़प्पन की इच्छा ओछे व्यक्ति करते हैं पर जिनका दृष्टिकोण विशाल है, उन्हें महापुरुष बनने की ही आकांक्षा रहती है और अध्यात्मवादी आस्थायें उन्हें उस लक्ष्य तक सफलता एवं सरलता पूर्वक पहुँचा भी देती हैं। बड़प्पन अगणित उलझनें लेकर आता है, किन्तु महानता से सारी गुत्थियाँ सुलझती हैं। बड़प्पन में विकृतियों की आशंका पग-पग पर विद्यमान है पर महानता का पथ निर्द्वन्द है। इसी से दूरदर्शी लोग बड़प्पन को तिलाञ्जलि देकर महानता का अव-लम्बन लेते हैं और मनुष्य जीवन की सार्थकता का आनन्द लेते हैं।

भारत की एकमात्र विशालता एवं सम्पदा उसकी अध्यात्मवादी आस्था

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ही रही है । इसी से उसे 'पृथ्वी का स्वर्ग' और देवताओं का निवास–स्थल कहलाने का सौभाग्य प्रदान किया और समस्त संसार के सामने हर क्षेत्र में हर दृष्टि से सम्मानित अग्रिणी बना रहा । जहाँ आन्तरिक उत्कृष्टता होगी, वहाँ बाह्य सामर्थ्य एवं समृद्धि की कमी रह ही नहीं सकती । यही विशेषतायें हमें समस्त विश्व का मार्गदर्शन करने एवं विविध अनुदान दे सकने योग्य बनाये रह सकीं । अपनी इस विशेषता को खोया तो मणिहीन सर्प की तरह खोखले हो गये ।

संसार वालों ने अध्यात्म का प्रथम पाठ पढ़ा है और वे सांसारिक उन्नति की दिशा में बहुत आगे बढ़ गये । साहस, पुरुषार्थ, श्रम, तन्मयता, स्वावलम्बन, नियमितता, व्यवस्था, स्वच्छता, सहयोग जैसे गुण अध्यात्म के प्रथम चरण में आते हैं । इन्हें यम नियम की परिभाषा में अथवा धर्म के दस लक्षणों में गिना जा सकता है । पाश्चात्य देशों ने उतना भर सीखा है । इन्हीं गुणों ने उन्हें शारीरिक, बौद्धिक, संगठनात्मक एवं वैज्ञानिक उपलब्धियों से भरपूर कर दिया । जो देश कुछ समय पहले तक गई गुजरी स्थिति में पड़े थे, उन्होंने अध्यात्म का प्रथम चरण सद्गुणों के रूप में अपनाया और आश्चर्य जनक भौतिक उन्नति कर सकने में सफल हो गये । यदि वे दूसरे चरण -उत्कृष्टता एवं आदर्शवादिता की भूमिका में प्रवेश कर सके होते, आस्तिकता एवं आत्मवादी तत्व-ज्ञान को भी अपना सके होते, अध्यात्मवाद का अगला चरण भी बढ़ा सके होते तो उनकी भी वही महानता विकसित हुई होती, जो कभी इस भारत भूमि के निवासी महामानवों में निरन्तर प्रस्फुटित होती थी ।

अध्यात्म का तत्व-ज्ञान मनुष्य को आदर्शवादिता एवं उत्कृष्टता की विचारणा से ओत-प्रोत भावनाओं से विभोर एवं प्रक्रिया से तत्पर बनाये रखने वाला दार्शनिक अवलम्बन है । हम ईश्वर के सत् चित आनन्द स्वरूप अविनाशी अंग हैं, अस्तु अपनी महानता को अक्षुण्य बनाये रखें । मानव जीवन महान् प्रयोजन के लिये चिरकाल उपरान्त मिला है, उसका उपयोग उच्च प्रयोजनों के लिये करें । ईश्वर सर्वव्यापी, निष्पक्ष एवं न्यायकारी है, उसके दण्ड एवं कोप से बचने के लिये दुर्भावनाएँ एवं दुष्प्रवृत्तियाँ त्यागें । समस्त प्राणी ईश्वर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के पुत्र और अपने भाई हैं, इसलिये उनके साथ सद्व्यवहार करें। अपने पाशविक कुसंस्कारों को हटाने के लिये संघर्ष साधना, तितीक्षा, संयम एवं तपश्चर्या का अभ्यास करें। फैली हुई दुष्प्रवृत्तियों को हटाने का पुरुषार्थ कर अपने आत्म बल को विकसित करें। आदर्श जीवन जीकर दूसरों के लिये प्रकाश प्रदान करने वाले उज्ज्वल नक्षत्र सिद्ध हों। उन विचारों से ओत-प्रोत रहें, जिनसे शांति मिले। इन्हीं आस्थाओं को हृदयंगम कराने के लिये सारा धर्म कलेवर खड़ा किया है। समस्त कर्मकाण्डों के पीछे इन्ही आस्थाओं को जीवन में उतारने का मनोवैज्ञानिक उद्देश्य छिपा पड़ा है।

पर आज के प्रचलित तथा कथित अध्यात्म की दिशा बिलकुल उल्टी है। वह व्यक्ति को भावनात्मक उत्कर्ष की ओर उठाने की अपेक्षा पतनोन्मुख बनाने में सहायक हो रहा है। भगवान् की कृपा प्राप्त करने के लिए तीर्थ स्नान, देव-दर्शन, भजन-कीर्तन आदि के कर्मकाण्ड ही पर्याप्त मान लिये गये हैं, लोगों ने यह सोचना छोड़ दिया है कि इन कर्मकाण्डों का उद्देश्य भगवान् की न्यायकारी सर्वव्यापक सत्ता का हर घड़ी स्मरण दिलाते रहना मात्र है। इस स्मरण का प्रयोजन यह है कि व्यक्ति सबमें ईश्वर की झाँकी करके हर किसी से सद्व्यवहार में निरत रहे। न्यायकारी के न्याय से डरे और कुछ का कुछ करके फल भोग से बच जाने की बात न सोचे। यदि देव-दर्शन, भजन-कीर्तन आदि के द्वारा उपरोक्त सदाचरण एवं परमार्थ की भावना उदय हो तो ही इन कर्मकाण्डों का महत्व है। अन्यथा प्रशंसा करके या प्रसाद खिलाकर परमेश्वर के वरदान,आशीर्वाद पाने की ललक एक भ्रम भरी विडम्बना हीकही जायेगी।

भाग्यवाद एवं ईश्वर की इच्छा से सब कुछ होता है जैसी मान्यताएँ विपत्ति में असन्तुलित न होने एवं सम्पत्ति में अहंकारी न होने के लिये एक मानसिक उपचार मात्र है। हर समय इन मान्यताओं का उपयोग अध्यात्मकी आड़ में करने से तो व्यक्ति कायर अकर्मण्य और निरुत्साही हो जाता है। सोचता है, अपने करने से क्या होगा, जो भाग्य में होगा, ईश्वर की इच्छा होगी वही होगा। पुरुषार्थ की दौड़-धूप करने से क्या लाभ ? इस प्रकार की मान्यता वाले की प्रगति का क्रम समाप्त हो गया ही समझना चाहिये।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

देव शक्तियों से लोग अपने में देवत्व के अवतरण की मांग करते,उनकी विशेषताओं, प्रेरणाओं एवं महानताओं को अपने में जागृत करने की आशा रखते तो देव-पूजन का प्रयोजन सिद्ध होता। पर अब तो लोग देव पूजन इस शर्त पर करते हैं कि हमारी अमुक मनोकामना बिना पुरुषार्थ किये अथवा योग्यता उत्पन्न किये ही देव कृपा से अनायास ही पूरी हो जाय। इस विकृति का परिणाम यह हुआ कि लोग अपनी योग्यता बढ़ाने एवं पुरुषार्थ करने में जो प्रयत्न करते उन्हें छोड़कर परावलम्बी होते चले गये और उन्हें दीन–दरिद्र रहना पड़ा। उल्टी और विकृत मान्यतायें किसी को कुछ लाभ नहीं दे सकतीं केवल दुर्बलता और हानि ही प्रस्तुत कर सकती हैं।

अध्यात्म का तात्पर्य है आत्मा की परिधि का विस्तार। अपने अहम् को–स्वार्थ परता को संकीर्ण परिधि को–विश्व-मानव के लियेपरमात्माके लिये उत्सर्ग कर देना यही आत्मिक प्रगति का एकमात्र चिन्ह है। अनादिकाल से यही परम्परा चली आ रही है कि जो अपने व्यक्तिगत लोभ-मोह, यश एव सुख को जिस हद तक विश्व-मंगल के कृत्य में परित्याग करता है, वह उसी सीमा तक परमात्मा के सान्निध्य में पहुँचा माना जाता है। पर अब तो ठीक उलटा है। जो जितना स्वार्थी, संकीर्ण, अनुत्तरदायी अकर्मण्य है, वह उतना ही त्यागी-तपस्वी है। सबके सुख-दुःख को अपना सुख-दुःख समझकर–आत्म-सुख को लोक-मंगल में घुला देने की प्रवृत्ति अब अध्यात्मवादियों में दिखाई नहीं पड़ती वरन् लोग अपनी भौतिक सुख-सुविधाओं की अभिवृद्धि के लिये ईश्वरीय सहायता की याचना-कामना किया करते हैं और उसी तराजू पर दैवी कृपा या अकृपा का–अपनी पूजा-पत्री की सफलता, असफलता का–मूल्यांकन करते हैं। फलस्वरूप अब अध्यात्म व्यक्तिवाद का पोषक बनता जाता है और ऋद्धि-सिद्धियों से लेकर स्वर्ग मुक्ति तक विभिन्न स्तर के स्वार्थों की पूर्ति के लिये लिप्साएँ उत्पन्न करता है। यह स्तर बदला न गया तो तत्व-ज्ञान का महान् दर्शन मानव जाति के लिये और अधिक विपत्ति उत्पन्न करने वाला बनता चला जायेगा।

अध्यात्म दर्शन में उत्पन्न हुई विकृतियों ने हमारा मानसिक और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

642301

सामाजिक ढांचा चरमरा कर रख दिया है । निष्ठा, सदाचार, लोक-सेवा और उदात्त मनोभूमि के कारण पूजे-जाने वाले साधु-ब्राह्मण जब वंश और वेश के आधार पर पूजा-प्रतिष्ठा प्राप्त करने लगे तो उन महान् गुणों की ओर ध्यान देना ही बन्द हो गया । ओछे लोग जहाँ भी पूजे जायेंगे, वहाँ विकृतियाँ ही बढ़ेंगी, कर्म के आधार पर आरम्भ हुआ वर्णाश्रम धर्म जब वंश पर अवलम्बित हो गया और उसमें नीच-ऊँच का भेदभाव घुस गया तो ब्राह्मण दुर्गुणी होने पर भी पूजा जाने लगा और शूद्र सद्गुणी होने पर भी दुत्कारा जाने लगा । जहाँ गुणों का वर्चस्व समाप्त हो जाये और अकारण ही लोगों को मान या अपमान मिलने लगे तो वह समाज अपनों की और दूसरों की दृष्टि में अधः पतित होगा ही ।

ओछा तत्व-दर्शन अपनाये रहने वाला व्यक्ति और समाज कभी भी ऊँचा नहीं उठ सकता । दर्शन ही प्रेरणाओं का आधार है । उसी के अनुरूप विचारणायें, आकांक्षायें और क्रियायें उत्पन्न होती हैं । दर्शन ही व्यक्ति को ढालता है और उसी ढाँचे में समाज का कलेवर खड़ा होता है । हम अपने समाज और संसार को समर्थ समृद्ध और सुविकसित बनाना चाहते हों तो उसका सर्व प्रमुख उपाय यही है कि वर्तमान विकृतियों का परिशोधन किया जाय ।

यदि इस स्थिति को सुधारा, संभाला और बदला न गया तो भावी परिस्थितियां दिन-दिन अधिक भयावह होती चली जायेंगी । वैयक्तिक जीवन में आदर्शवादिता और उत्कृष्टता उत्पन्न करनेवाला जब प्रकाश ही बुझ जायेगा तो अन्धकार में भटकने वाला दुर्दशा ग्रस्त ही होगा ।

आज की महत्तम आवश्यकता यह है कि हमारा तत्व-ज्ञान और दर्शन अपने सौम्य पथ से भ्रष्ट होकर जिस अवांछनीयताकी दिशामें चल पड़ा है, उसे रोका और टोका जाये । दिग्-भ्रांत जन-मानस को वस्तु स्थिति से परिचित कराया जाय और अध्यात्म के महान स्वरूप, उपयोग एवं प्रतिफल से भली-भाँति परिचित कराया जाये ।

क्र० ३०/प्र०—युग निर्माण योजना, मु०—युग निर्माण प्रेस मथुरा। मूल्य ४० पैसा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org